

# CSIR in Media



*75 Years of*

**CSIR Touching Lives**

**News Bulletin**

**1<sup>st</sup> to 10<sup>th</sup> January 2019**





# 22 वर्ष पूर्व बनी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

एनएमएल के निदेशक को बनाया गया समिति का अध्यक्ष, वर्षभर कराए जाते हैं कार्यक्रम

## विश्व हिंदी दिवस पर विशेष

जासं, जमशेदपुर : जमशेदपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नगरकास) देश की प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण समिति है, जिसका गठन 22 वर्ष पूर्व किया गया था। इसका सचिवालय सीएसआइआर-एनएमएल में स्थापित किया गया तथा इसके निदेशक को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

संस्थान का राजभाषा अधिकारी इस समिति का सदस्य सचिव होता है, लिहाजा यह जिम्मेदारी डॉ. पुरुषोत्तम कुमार को मिली है। यह समिति नगर में स्थित विभिन्न कार्यालयों के सहयोग से पूरे वर्ष कई कार्यक्रमों का आयोजन करती है। हिंदुस्तान पेट्रोलियम द्वारा इस समिति के लिए प्रतिवर्ष बड़ी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। एटामिक एनर्जी, खासमहाल द्वारा राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक गोष्ठी का आयोजन हिंदी माध्यम से किया जाता है। यूसिल जादूगोड़ा द्वारा वर्ष में कम से कम 12 कार्यशाला का आयोजन आयोजन किया जाता है। नराकास जमशेदपुर वर्ष 2013 से स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राओं के लिए 'आपकी सफलता आपके हाथ आपके साथ' जैसे लोकप्रिय कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न स्कूलों में जाकर करता रहा है जिससे बच्चों को नकारात्मक मानसिकता से बाहर निकलने में बड़ी सफलता मिली है और वे जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने और उस पर विजय प्राप्त करने की कला सीखने लगे हैं। इस कार्यक्रम से बच्चों को तनाव और अवसाद से बाहर निकलने में काफी मदद मिली है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा इस

## 400 अधिकारियों को यूनिकोड सिखा चुके पुरुषोत्तम कुमार



एनएमएल के हिंदी अधिकारी व जमशेदपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव डॉ. पुरुषोत्तम कुमार का हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान रहा है। ये शहर में विभिन्न विभागों के लगभग 400 अधिकारियों को यूनिकोड का प्रशिक्षण दे चुके हैं। राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए डॉ. पुरुषोत्तम कुमार को व्यक्तिगत रूप से भारत सरकार द्वारा 11 बार प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुका है। कई बार राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार दिया गया है। इन्होंने बैंक व बीमा संस्थान, बल्कि आयकर, केंद्रीय जीएसटी व उत्पाद विभाग से लेकर यूसिल तक में हिंदी को प्रोत्साहित करने में प्रभावी भूमिका निभाई है।

कार्यक्रम की खूब प्रशंसा की गई है। इस विशेष प्रशंसनीय कार्य को भारत सरकार ने अपनी वेबसाइट पर छला है। नागपुर में हुआ था प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन : विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करना, हिंदी के प्रति अनुराग पैदा करना, हिंदी की दशा के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है। प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी

## विधायक लक्ष्मण टुडू ने सूरीनाम में किया था हिंदी का गुपगान

घाटशिला के भाजपा विधायक लक्ष्मण टुडू ने 2003 में सूरीनाम जाकर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया था। लक्ष्मण टुडू बताते हैं कि 2003 में सूरीनाम में सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ था। इसमें पूर्वी सिंहभूम से चार सदस्यीय टीम गई थी। उन्होंने बताया कि हर पांच वर्ष में एशिया महाद्वीप के किसी न किसी देश में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जाता है और सूरीनाम का आयोजन भी इसी श्रृंखला में था। इसमें एशिया महाद्वीप के तमाम देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए थे। इसमें सभी ने एक स्वर से कहा कि पूरे विश्व में हिंदी ही पौराणिक व प्रमाणिक भाषा है। हिंदी भाषियों की संख्या दुनिया में सबसे अधिक है। हिंदी भाषा मनु सभ्यता के समय बोली जाने वाली भाषा है। इसलिए इसके संवर्द्धन और प्रसार के लिए पूरे एशिया महाद्वीप के लोगों को समवेत प्रयास करना चाहिए।

## कई अंतरराष्ट्रीय सेमिनार की अध्यक्ष रहीं मुदिता चंद्रा

एबीएम कालेज की प्राचार्य डॉ. मुदिता चंद्रा हिंदी पर आयोजित कई अंतरराष्ट्रीय सेमिनार की अध्यक्षता कर चुकी हैं। उन्होंने बाली में वेदों में नारी की स्थिति, हांगकांग में समाज परिवर्तन में साहित्य की भूमिका और ताशकंद में हिंदी सिनेमा पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। हिंदी के प्रति लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि विदेशों में हिंदी की काफी मांग है।



## ताशकंद में पुष्पा ने भीष्म साहनी पर दिया था व्याख्यान

जमशेदपुर वीमेंस कालेज में हिंदी विभाग की प्रमुख डॉ. पुष्पा कुमारी ने ताशकंद में भीष्म साहनी की कहानियों और मानवीय संवेदना पर अपने विचार रखे थे। यह सेमिनार विश्व हिंदी मंच, विश्व आयुर्वेद परिसंघ, लाल बहादुर सेंटर फॉर इंडियन कल्चर विदेशों में लोगों को हिंदी में जागरूकता पैदा करने का कार्य कर रहा है।



## मॉरीशस में सम्मानित हुए थे डॉ. सी. भास्कर राव



उलियान निवासी डॉ. सी. भास्कर राव उन चुनिंदा शख्सियतों में शुमार किए जाते हैं, जो गैरहिंदी भाषी परिवार में परवरिश होने के बावजूद हिंदी में बड़ी पहचान रखते हैं। जमशेदपुर को-आपरेटिव कालेज से वर्ष 2001 में हिंदी विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त डॉ. राव 18-20 अगस्त 2018 को मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित किया गया था। तेलुगू भाषी डॉ. राव इससे पहले सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने सूरीनाम भी गए थे। इनकी अब तक हिंदी में चार उपन्यास, 10 कहानी संग्रह, 11 व्यंग्य संग्रह, दो विचार संग्रह, चार नाटक और छह सिनेमा आधारित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

शहरों में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा इन समितियों का गठन किया गया और प्रावधान यह किया गया कि शहर के स्थित सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालय, बैंकिंग संस्थाएं, उपक्रम, स्वायत्तशासी निकाय एवं शिक्षण संस्थान इस समिति के सदस्य होंगे। शहर के सबसे बड़े कार्यालय के पास इस समिति का सचिवालय होगा, जो शहर में स्थित सभी कार्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।



CSIR-IICT

9<sup>th</sup> January, 2019

# Smart machines may be a big threat in future

'Nextgen machines likely to create intelligence akin to humans'

## OUR BUREAU

**Hyderabad:** Intelligence akin to humans might be created by the next generation of machines, observed Prof. Mriganka Sur, Newton Professor of Neuroscience and Director, Simons Centre for Social Brain, Massachusetts institute of technology, Boston, (USA) here, on Tuesday.

Delivering the seventh Dr Manohar VN Shirodkar Memorial Lecture - 'How does the brain create the mind', the endowment instituted by Rajkumari Indira Devi Dhanrajgir, and organised by the Telangana Academy of Sciences, he described human mind as an astonishing feat of nature comprising about 90 billion neurons or brain cells, which are organised into discrete processing systems.

'Each neuron connects with hundreds of other neurons via thousands of connections. Yet neurons don't connect indiscriminately. Synaptic connections between specific sets of neurons create circuits that enable the brain's remarkable information processing capabilities



**Prof Mriganka Sur, Newton Professor of Neuroscience and Director of Simons Centre for Social Brain at MIT, Boston, delivers Seventh Dr Manohar V N Shirodkar Memorial Lecture on 'How does the brain create the mind?' organised by Telangana Academy of Sciences**

and give rise to recognition', the professor stated.

Dr Sur has a B tech Degree in Electrical Engineering from IIT Kanpur. He is a PhD from Vanderbilt University, Nashville, (USA). He has trained over 75 doctoral students and post-doctoral fellows. Sur received awards for outstanding teaching and mentoring. At MIT, he has been recognised with the Sherman Fairchild and Newton chairs. He is an elected fellow of the Royal Society of the UK, National Academy of Medicine,

American Academy of Arts and Sciences, American Association for the Advancement of Science, World Academy of Sciences and the Indian National Science Academy.

Dr S Chandrasekhar, Director, Indian Institute of Chemical Technology (IICT), where the lecture was delivered, and secretary of TAS, Prof. K Narasimha Reddy, president of TAS, Dr Ch Mohan Rao, CSIR distinguished scientist and former chief of TAS, Dr B Serikiran, former NIN Director, besides Dhanrajgir participated in the Memorial Lecture.

**Published in:**

The Hans India



# అన్నింటికీ మెదడే మూలం

తారాక: మన శరీరంలో జరిగే ప్రతి ప్రతిస్పందనకు మెదడే మూలమని, అందులోని కోట్లాది న్యూరాన్ కణాలు శరీరానికి అవసరమైన సమాచార వ్యవస్థను పటిష్టం చేస్తాయని అమెరికాలోని సీమన్స్ సెంటర్ ఫర్ ది బ్రెయిన్ ఇనిస్టిట్యూట్ ఆఫ్ టెక్సాస్ డైరెక్టర్ ప్రొఫెసర్ మ్రిగాంకర్ సుర్ అన్నారు. మంగళవారం తారాకలోని ఇండియన్ ఇనిస్టిట్యూట్ ఆఫ్ కెమికల్ టెక్నాలజీ (ఐఐసీటీ)లో తెలంగాణ అకాడమీ ఆఫ్ సైన్స్, ఐఐసీటీ సంయుక్తాధ్వర్యంలో నిర్వహించిన డాక్టర్ మనోహర్ వీఎన్ శిరోద్కర్ స్మారకోపన్యాస కార్యక్రమానికి ఆయన హాజరై 'హా డజ్ ది బ్రెయిన్ క్రియేట్ ది మైండ్' అనే అంశంపై మాట్లాడారు. శరీరంలోని అనేక అవయవాల చర్యలు మెదడులోని న్యూరాన్ కణాలతోనే జరుగుతాయన్నారు. ఆలోచనలు, ప్రేమ, అనురాగం, వాత్సల్యం తదితర మెదడు చేసే చర్యలతోనే ఉత్పన్నమవుతాయన్నారు. మెదడులోని కోట్లాది న్యూరాన్ల మధ్య ఒక నెట్వర్క్ ఏర్పడి, అది అవయవాల పనితీరును



డాక్టర్ మ్రిగాంకర్ను సన్మానిస్తున్న  
డాక్టర్ చంద్రశేఖర్

నియంత్రిస్తుందన్నారు. కార్యక్రమంలో ఐఐసీటీ డైరెక్టర్ డాక్టర్ చంద్రశేఖర్, తెలంగాణ అకాడమీ ఆఫ్ సైన్స్ డైరెక్టర్ ప్రొఫెసర్ నర్సింహారెడ్డి, మాజీ డైరెక్టర్ డాక్టర్ మోహన్రావు, పలువురు శాస్త్ర వేత్తలు పాల్గొన్నారు.



## Empty rakes take to the track on Pamban bridge

CSIR-SERC

8<sup>th</sup> January, 2019

More than a month after suspension of rail services on Pamban rail bridge after some members of the Scherzer's span developed cracks, the Madurai division of Southern Railway test-ran empty rakes of an express train on the structure on Monday. The railway division ran the empty rakes of Tirupati– Rameswaram Express after terminating the service at Mandapam as a team of engineers from the Structural Engineering Research Centre (SERC), Chennai, tested the stress after installing sensors in one section of the span.

SERC Director Santosh Kapuria, who inspected the bridge on Monday, told reporters that the centre, a constituent research laboratory of the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), had sought a month's time to complete the testing and submit a report to Southern Railway. The centre would try to submit the report even before that. After submission of the report, it was for Southern Railway to take a decision on resumption on rail services on the bridge.

The Railways had already carried out retrofit measures. SERC would test the span for necessary loading for the railway wagons and inform the railways, he said.

“After the test we will be able to say whether as of now the stresses are within permissible limits,” he said.

After installing sensors in one section of the span, SERC engineers found that they worked fine when the empty rakes passed through the span in the bridge. After installing sensors on the other section, they would conduct load testing and submit report to the railways on the safety of the span in the bridge, he said.



SERC would take 15 days to complete the testing. “We will assess the maximum strain and stress to critical members of the span during full load testing,” he said replying to a question. Meanwhile, the Madurai division announced that the Rameswaram–Tirupati express, which was scheduled to leave Mandapam at 4.30 p.m. would leave at 11.30 pm.

**Published in:**  
[Deccan Herald](#)



## Forest dept, IIM form committee to collaborate on phytopharma production

CSIR-IIIM

5<sup>th</sup> January, 2019

JAMMU: Principal Chief Conservator of Forests, Suresh Chugh Thursday reviewed modalities for development of Phyto-Pharmaceutical Drugs from the medicinal plants in Jammu & Kashmir in association with Indian Institute of Integrative Medicine (IIIM), an Institute of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR). Director CISR – Indian Institute of Integrative Medicine Ram Vishukarma, and Consultant of Indian Institute of Integrative Medicine (IIIM) YS Bedi attended the meeting and made a presentation on the subject. It was decided in the meeting that there are a number of areas where the two organizations can cooperate.

Since the medicinal plant resource is with the Forest department and IIIM can take up research activity on certain selected medicinal plants and later the outcome of the research can be shared between the two organizations. In this regard, a committee of officers was constituted under Director, State Forest Research Institute, J&K, and two Conservators CF East and CF West to develop the modalities in association with Indian Institute of Integrative Medicine (IIIM) so that a MoU is framed with the Indian Institute of Integrative Medicine and cooperation between the two agencies is given a go-ahead. The meeting among others was attended by Abdul Ghani, Chief Conservator of Forests Central, Sameer Bharati, Chief Conservator of Forests Jammu, S. Mohinder Singh, Conservator of Forests Central Circle, B. Mohan Das, Conservator of Forest East Circle, Dr. Jitender Kumar, Conservator of Forests West Circle.

**Published in:**

[Kashmir Reader](#)



## Eastern expressway cut air pollution in Delhi by 7%: CRRI study

CSIR-CRRI

4<sup>th</sup> January, 2019

The Central Road Research Institute (CRRI) conducted the study on behalf of the Delhi government's environment department, taking the source apportionment study done by IIT Kanpur in 2016, as its basis. The Eastern Peripheral Expressway, which was launched in May 2018, has brought down vehicular pollution in Delhi by at least 7%, a recent study has indicated.

The Central Road Research Institute (CRRI) conducted the study on behalf of the Delhi government's environment department, taking the source apportionment study done by IIT Kanpur in 2016, as its basis. “..The results have been submitted to the environment department,” said Ravindra Kumar, head of transportation planning and environment at CSIR-CRRI.

A senior official of the environment department said the results of the latest study show that while levels of nitrogen dioxide has shot up by 7% along EPE the level of carbon monoxide has increased by 2.5%. The level of particulate matter has also gone up by 0.9% along the EPE because of increased vehicular activities after the expressway was thrown open in May 2018.

“The EPE was expected to reduce the number of heavy diesel truck traffic that enters the national capital triggering traffic chaos and air pollution. The fact that pollution levels along the EPE have gone up, indicates that the same amount of pollution has gone down inside the city,” said a senior official of the Delhi environment department, who is privy to the report.



The study, which was conducted over a period of 48 hours in mid-November 2018, shows that on an average 10,000 vehicles were using the EPE every day. Out of this, around 32% are trucks and 60% are cars. Around 8% of the vehicles are other types of vehicles, including buses and tractors, the official said. An IIT Kanpur-study had earlier stated that vehicles contribute around 36% of nitrogen dioxide and 20% of PM<sub>2.5</sub> in Delhi. A further breakdown of pollution sources done by TERI and ARAI in 2018 revealed that among the vehicles, trucks contribute the highest pollution of 8%, followed by two-wheelers (7%), and three-wheelers (5%).

“That the vehicular pollution is showing a decreasing trend because of the EPE is a good sign. Vehicular pollution is expected to go down further because of the inauguration of the Western Peripheral Expressway,” said Sunita Narain, member of the Supreme Court appointed body Environment Pollution (Prevention and Control) Authority (EPCA). It was estimated that around 25,000-30,000 heavy goods vehicles, which pay the environment compensation charge (ECC), would use the six-lane Eastern Peripheral Expressway every day. But since it opened, only around 16,000 of them use the EPE per day, an audit report prepared by the National Highways Authority of India (NHAI) earlier in September 2018 had stated. The report was submitted to the SC-appointed Environment Pollution (Prevention and Control) Authority (EPCA) the same month.

Eastern Peripheral Expressway was aimed at diverting at least 50,000 vehicles going to Jammu and Kashmir, Punjab, Haryana, Uttarakhand, Uttar Pradesh and Rajasthan, decongesting the national Capital and bringing down vehicular pollution. The western wing of the peripheral expressway, which connects Kundli with Manesar and Palwal, opened in November last year.

**Published in:**

[Hindustan Times](#)



## Entrepreneurship Development programme on skill training begins

CSIR-NML

4<sup>th</sup> January, 2019

Jamshedpur, Jan. 3: The Module 1 of the Entrepreneurship Development Programme on “Skill training on Total Waste Management for Rural Entrepreneurship Development” organized by National Research Development Corporation (NRDC) in association with RELEARN Foundation started on 3<sup>rd</sup> January. The first day of this ten days training program started with state master trainer Sushant Kumar training the participants on paper up cycling.

This training program is being organized under the Skill India Scheme for Entrepreneurship Development in North East and Rural Areas. Over the span of ten days the youth belonging to the age group of 21 yrs to 45 yrs from across the country will be trained on Total Waste Management focusing on waste generated in rural areas, community waste collection system, value added product development by resource persons like Gaurav Anand, Chief Manager Jusco, P. Chatterjee CSIR-CMERI, Prof Prabal Kumar Sen, founder chairperson, EDC, XLRI, Dr. Mita Tarafder, Chief Scientist, CSIR- NML.

The module 1 of the training program will be conducted in Vijaya Garden from 10am to 4pm. A one month active training will be provided to the participants on the successful completion of this ten day training program. The event turned out to be a successful due to the endeavors of Kumari Namita, Deepak Dhibar, Madhumita, Geeta and Rashmi.

**Published in:**

[Avenue Mail](#)



CSIR-CFTRI

4<sup>th</sup> January, 2019



[Home](#) / [Headlines](#) / [CSIR-CFTRI signs MoU with JSS Science and Technology University to boost research works](#)

[Headlines](#)

[Mysore](#)

[Technology](#)

## CSIR-CFTRI signs MoU with JSS Science and Technology University to boost research works



Mysuru, January 4:- CSIR-CFTRI of the city has signed a memorandum of understanding (MoU) with JSS Science and Technology University on Wednesday, in the presence of Shivarathri Deshikendra Swamiji of Suttur Mutt.

Vice-Chancellor of the university Dr B J Sangameshwara opined that inventions and progress in research can be achieved by the latest initiative. He also opined that it would make universities to become research centres as advised by All India Council for Technical Education (AICTE) and University Grants Commission (UGC).

Dr Raghavendra Rao, Director of CSIR-CFTRI, said that the MoU would come in handy in researches in the field of science and technology in the coming days.

The MoU helps in researches on healthy food, mission learning, and artificial intelligence. It would also help in organising seminars, workshops and training.

The MoU was exchanged between Dr Sangameshwara and Dr Rao.

Scientists of CFTRI Dr Keshava Prakash, Dr Chowhan, Dr Satyendra Rao, Manilal, executive secretary of JSS Mahavidyapeetha Dr C G Betsurmath, Registrar Dr K S Lokesh, Mallikarjuna Aradhya, principal Dr T N Nagabhusan and others were present. (MR/GK)

**Published in:**  
[City Today](#)



## हेल्थ न्यूज



भारतीय विष विज्ञान  
अनुसंधान संस्थान की तरफ  
से बुधवार को सुरक्षित भोजन  
के प्रति लोगों में जागरूकता  
लाने के लिए कई कार्यक्रमों  
का आयोजन हुआ। पेश है  
एक रिपोर्ट।

### कार्यक्रम

1

लखनऊ | निज संवाददाता

शक्कर की लत कोकीन की लत से कई गुना अधिक होती है। यानी कोकीन का नशा छोड़ा जा सकता है लेकिन शक्कर छोड़ना लोगों के लिए नामुमकिन हो जाता है। भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आईआईटीआर) में स्वच्छ और स्वच्छ खानपान के

मनोविज्ञान का विज्ञान समझाते हुए एसजीपीजीआई के सीनियर हार्ट सर्जन डॉ निर्मल गुप्ता ने ये जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शक्कर की इसी लत का फायदा खानपान इंडसट्री उठाती है। ईट राइट विषय पर भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान में संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महापौर संयुक्ता भाटिया ने भी संगोष्ठी में खाने से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ निर्मल गुप्ता ने बताया कि टोमेटो केचप में शक्कर के साथ टाईट्रिक एसिड मिलाते हैं। इससे खट्टा स्वाद लगने लगता है। वहीं अब तो नमकीन में शक्कर मिलाया जा रहा है। ऐसी नमकीन हमें बहुत स्वादिष्ट लगती हैं। हम समझ नहीं पाते लेकिन शक्कर के एडिक्शन (लत) में हम फंस जाते हैं।

डॉ निर्मल बताते हैं कि खाना हमें सबसे कम प्रोसेस किया हुआ ही खाना चाहिए। उदाहरण के साथ वह बताते हैं कि गन्ना के रस को उबाल कर गुड़ बनता है। कई तरह की प्रोसेसिंग के बाद शक्कर बनती है। इसलिए अगर हम शक्कर के स्थान पर गुड़ का प्रयोग करें तो वह ज्यादा सुरक्षित होगा।



## Get personal alcometer for Rs 100 by next yr

CSIR-CEERI

3<sup>rd</sup> January, 2019

Scientists at the Council of Scientific and Industrial Research-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI), Pilani, Rajasthan, have developed a cheaper, handy and app-based alcometer. At present, cops use imported alcometers priced between Rs 4,000 and Rs 5,000. Satyam Srivastava, a scientist at CEERI, said, “As of date, there is no India-made breath analyser available. But we have developed some cheaper instruments, which will be available between Rs 100 and Rs 1,000 in the market by the next year. After getting its patent, we signed a non-disclosure agreement with two Indian companies. We will transfer the technology to them and they will start manufacturing the products for Indian market.”

Srivastava added, “Our alcometers are mobile app-based and will help cops take down the vehicle number, image of the violator and value being recorded. They can take a printout of the same to produce as proof in court.” He added that the India-made devices would be more accurate.

While devices to be used by the police will be priced at Rs 1,000, keychain-sized smaller versions for personal use will be available for just Rs 100. Those consuming alcohol will be able to test themselves before hitting the road. The app with the device will tell them time alcohol concentration will take to come within the permissible limits.

Pramod Kumar Tanwar, head, business development, CEERI, said, “We have also developed diabetes detectors. These are used like breath analysers and require no blood sample.”

**Published in:**

[The Tribune](#)



## Gujarat Chamber of Commerce and Industry to become gateway for MSMEs to access CSIR tech

CSIR-IICT

2<sup>nd</sup> January, 2019

Micro Small and Medium Enterprises (MSMEs) in Gujarat will soon be able to access technology of Indian Institute of Chemical Technology (II-CT) of Council of Scientific and Industrial Research (CS-IR). Leaders of IICT and Gujarat Chamber of Commerce and Industry (GCCI) will soon concretize the agreement.

This will involve technological research for MSMEs, Transfer of Technology (ToT) as well as solutions related to effluent treatments. The announcement was made during an interactive meet between members of GCCI and senior officials of CSIR – IICT in Ahmedabad on Thursday. S Chandrasekhar, director of CSIR-IICT said that until recently, over three dozen laboratories of CSIR was partnering with large companies and institutes affiliated to Defence Research and Development Organization (DRDO). Such partnerships with MSMEs is a recent phenomenon. "We have a similar arrangement with bulk drug manufacturers in Hyderabad. We are eyeing MSMEs from Gujarat as well," said Chandrasekhar.

GCCI president Jaimin Vasa said that GCCI will act as a single point contact for local MSMEs willing to access technology of IICT or outsourcing Research and Development (R&D) to IICT. "Companies in fields of chemicals, pharmaceuticals, or for that matter any sector which may find technology of IICT useful can approach GCCI for the same," said Vasa. Chandrasekhar said that the collaboration will be useful for MSMEs as they cannot conduct in-house R&D, but they require it as much as their larger peers.

**Published in:**

[Daily News & Analysis](#)



### 3 agencies to develop drugs based on ancient texts

CSIR

2<sup>nd</sup> January, 2019

Three Indian science research agencies have joined hands to develop drugs on the basis of ancient Indian knowledge with the underlying objective of making such medicines acceptable to doctors. At the moment, the practitioners of modern medicine come through the rigorous, scientific drug development process—a reality that may change with the new linkage between CSIR, ICMR and the Department of Biotechnology (DBT). On the table are seven drug candidates—four from the Council of Scientific & Industrial Research (CSIR), two from Indian Council of Medical Research (ICMR) and one from a DBT-funded institute in Imphal—which would be evaluated through the standard drug development route of pre-clinical and clinical trials.

These molecules have shown promise in laboratory studies on pain management, paediatric epilepsy, rheumatoid arthritis, gastric ulcer, neurodegenerative brain diseases, diabetes and cognitive dysfunction. The source plants range from cannabis to brahmi and ashwagandha. “The CSIR will come out with the R&D breakthrough and do the pre-clinical studies, while DBT will fund part of the research as well as to prepare the Investigational New Drug dossier that needs to be presented to the Drugs Controller General of India (DCGI). ICMR will fund and conduct the clinical trials,” Ram Vishwarka, who heads CSIR's Indian Institute of Integrative Medicine, Jammu, told DH.

Four out of the seven leads to be taken up under this programme came from the CSIR's Jammu institute. The new association comes three years after DCGI recognised phytopharmaceuticals as a new class of drugs besides chemical entities and biologicals. They are plant-based medicines which will be approved by the DCGI after scientific studies and clinical trials unlike the herbal drugs that are approved by the AYUSH regulators on the



basis of a very limited evaluation procedure. The United States Food and Drug Administration approved phyto-pharmaceuticals as a new class of drugs in 2005 and three new molecule in the last 13 years. So far, DCGI has not approved any such medicine for the Indian market. While CSIR had launched the phyto-pharmaceutical mission about a year back, the agreement between the three agencies was signed on Monday.

“This approach, being tried in the country for the first time, would lead to taking up of the identified activities in the mission mode through best of the institutions,” CSIR said in a press statement.

**Published in:**  
[Deccan Herald](#)



## Lecture on 'evolution of solar system' at NIO

CSIR-NIO

1<sup>st</sup> January, 2019

PANAJI: CSIR-National Institute of Oceanography (NIO), Dona Paula will be celebrating its 53rd Foundation Day on January 1. On this occasion, the institute will remain open for public from 9.30 to 11.30 am.

The people can visit the institute and view the marine aquarium that simulates coral ecosystem, models of research ships, exhibits of instruments used for oceanographic research, specimens of marine minerals rich in metals such as iron, manganese, copper, nickel, cobalt, and artefacts found by divers from ancient shipwrecks and marine archaeological sites, as well as films on ocean science, says a press communiqué issued here.

Later in the afternoon, a lecture on 'Origin and Early Evolution of the Solar System' will be delivered by PadmaShri Dr J N Goswami, former director of Physical Research Laboratory (PRL), Ahmedabad at the S Z Qasim Auditorium (NIO Auditorium), at 3.30 pm.

Dr Goswami is from Assam, and was born on November 18, 1950. He was the chief scientist of Chandrayaan-1, and also associated with Chandrayaan-2 and Mangalyaan. His main subject of research is solar system and astrophysics. He and his associate scientists have proven that the main resource of energy of solar system at the time of its origin was  $^{26}\text{Al}$  nuclide in its half life. He has also worked on cosmic rays, tectonic plates and concluded many theories. He was an associate scientist of cosmic ray experiment and chief scientist of lunar samples at spacecraft spacelab. He is popularly known as 'The moon man of India.'



His talk will emphasise on the quest for understanding the formation and evolution of the Sun and solar system. It will delve on the systematic studies to understand stellar objects, including stars and planets, started more than 2600 years back, when Pythagoras suggested ‘Earth is a sphere and all other heavenly bodies are perfect sphere.’

The talk will also deal with the advances in astrophysical studies and postulates, coupled with observational capabilities for studying stellar and planetary objects.

It will also elaborate on the extensive studies done at PRL over more than a decade that suggest that the formation of the Sun and solar system was triggered by an exploding star, a supernova, that is now accepted by the scientific community.

**Published in:**  
[The Navhind Times](#)

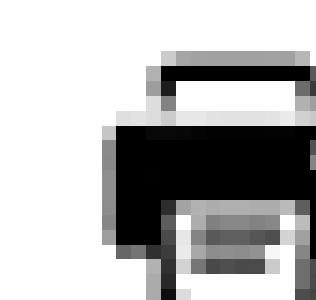
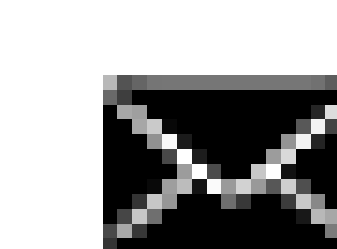


CSIR-CIMAP

1<sup>st</sup> January, 2019

# Centre aims to double aromatic plant cultivation in TN

Jan 1, 2019, 00:25 IST



A-

A+

The Centre for Medicinal and Aromatic Plants (CIMAP), Lucknow, aims to double the area under aromatic plant cultivation in Tamil Nadu by 2020. Besides working on increasing acreage, they want to focus on establishing adequate number of value addition industries to reduce import of value-added products based on essential oils. They hope that by the end of the aroma mission, adequate awareness on these plants would be created leading to gradual growth in acreage.

Speaking to TOI, chief scientist and nodal officer at CSIR-CIMAP Alok Kalra said they aimed to increase the acreage under aromatic plants cultivation in the state from 2,500 hectares to 5,000 hectares by 2020. "The state has around 2,500 hectares under various aromatic plants like vetiver, lemon grass, geranium and rose, among others. We want to increase it to 5,000 hectares under the aroma mission. We have tied up with TNAU for implementation of our project, because they have better resources to reach out to more farmers in the state," Kalra said.



He said CIMAP aims to create more farming clusters of these aromatic plants while strengthening and extending the existing ones. “While we already have high performing clusters like Vettiver in Cuddalore, we are trying to create a strong lemongrass cluster in the hills of Valparai and a geranium cluster in Ooty. Clusters here already exist, we want to expand it,” he said. “Through TNAU we are also trying to find or create new clusters and entrepreneurs too in the field,” he added.

Besides increasing acreage, the chief scientist said they aimed to link farmers, entrepreneurs and buyers together. “The cycle functions and expands only if farmers produce high quality or high essential oil containing plants and manage to extract oil through the extraction machines. They should be able to sell the same to the right industries to get a good price,” Kalra said. “By just giving farmers a better variety and new extraction plants, the oil extraction increases by 25% to 40% minimum,” he added. “Tamil Nadu has high potential in this field because many aromatic plants are drought resistant and keeps wild animals away,” he added.

**Published in:**  
[The Times of India](https://www.thehindu.com)



CSIR-NML

1<sup>st</sup> January, 2019

# राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने हंगरी में अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में किया दावा अब चांद पर बनेगा सपनों का आशियाना

## जागरण विशेष

विकास श्रीवास्तव • जमशेदपुर

चांद पर इमारतें खड़ी करने की तकनीक जमशेदपुर राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने खोज ली है। जियो पॉलीमर सीमेंट की सहायता से चंद्रमा पर उपलब्ध सामग्री से भवन निर्माण सामग्री का निर्माण संभव है। यही नहीं इस सीमेंट से वहां इमारतें खड़ी की जा सकती हैं। पिछले दिनों हंगरी में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने यूरोपियन यूनियन को इस बाबत प्रस्ताव भेजने का निर्णय लिया है।

यह कांफ्रेंस पिछले 23 व 24 नवंबर को रिसाइक्लिंग एंड वेस्ट यूटीलाइजेशन विषय पर आयोजित था। इस कांफ्रेंस में हंगरी के यूनिवर्सिटी ऑफ मिसकोल व स्लोवाकिया के इंस्टीट्यूट ऑफ जियो टेक्नोलॉजी और पोलैंड के क्रॉकोव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिक भी शामिल हुए थे। भारत का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला जमशेदपुर के वरीय प्रिंसिपल साइंटिस्ट व ग्रुप लीडर

## खुशखबरी

- चांद पर उपलब्ध सामग्री से ही संभव है भवन निर्माण सामग्री का निर्माण
- यूरोपियन यूनियन को इस बाबत प्रस्ताव भेजने का वैज्ञानिकों ने लिया निर्णय



मेटल एक्सट्रैक्शन एंड रिसाइक्लिंग संजय कुमार ने किया। वैज्ञानिक संजय कुमार के अनुसार, इसमें निर्णय लिया गया है कि यूरोपियन यूनियन को प्रस्ताव भेजा जाए कि चांद पर इमारत बनाने में जियो पॉलीमर सीमेंट के उपयोग की संभावना पर विचार किया जाए।

**धरती से ढोने की नहीं जरूरत:** वैज्ञानिक संजय कुमार के अनुसार, जियो पॉलीमर सीमेंट तैयार करने में जिन सामग्री का उपयोग होता है, उससे मिलती-जुलती सामग्री चांद पर प्राकृतिक



## क्या है जियो पॉलीमर सीमेंट

वैज्ञानिक संजय कुमार के अनुसार, जियो पॉलीमर सीमेंट आम सीमेंट की तरह नहीं है। यह फ्लाइ ऐश ( लौह उत्पादन प्रक्रिया में निकलने वाली राख ) व स्लैग ( फैक्ट्रियों की भट्टी में प्रयुक्त कोयला के जलने के बाद निकलनेवाले चूर्ण ) से तैयार ऐसी सामग्री है जो सीमेंट से अधिक मजबूत और वजन में हल्की होती है। यह कम लागत वाली सीमेंट है।



विगत 23 व 24 नवंबर को हंगरी में रिसाइक्लिंग एंड वेस्ट यूटीलाइजेशन कांफ्रेंस में निर्णय लिया गया है कि यूरोपियन यूनियन को प्रस्ताव भेजा जाए कि चांद पर आघासीय स्ट्रक्चर खड़ा करने में जियो पॉलीमर सीमेंट उपयोगी हो सकता है।

संजय कुमार, वरीय प्रिंसिपल साइंटिस्ट व ग्रुप लीडर मेटल एक्सट्रैक्शन एंड रिसाइक्लिंग

स्वरूप में मौजूद है। सबसे बड़ा फायदा यह कि इसे ढोकर चांद पर ले जाने की जरूरत नहीं। चांद पर उपलब्ध तत्वों से इसे तैयार करना आसान है। संभव है कि सामग्री को सॉलिड स्वरूप प्रदान करने में

पानी की भी जरूरत नहीं पड़े, क्योंकि चंद्रमा पर मिथेन गैस की उपलब्धता है। मिथेन से रासायनिक क्रिया कर इस सीमेंट को मनचाहे स्वरूप में ढालना संभव है।

**Published in:**

Dainik Jagran



CSIR-IHBT

जानकारी

आइएचबीटी में किसानों को सुगंधित फूलों की खेती के बारे में दी ट्रेनिंग, बताई तकनीकें, बीज भी करवाए उपलब्ध

# अरुणाचल के किसानों को समृद्ध बनाएगा अरोमा मिशन

संवाद सहयोगी, पालमपुर : हिमाचल में सुगंधित फसलों से किसानों की आर्थिकी सुदृढ़ करने वाला आरोमा मिशन अब अरुणाचल के किसानों को भी समृद्ध करेगा। इसके लिए अरुणाचल से आए सात किसानों को

काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंस्टीट्यूट रिसर्च-इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायो रिसोर्स टेक्नोलॉजी (सीएसआइआर-आइएचबीटी) पालमपुर में सुगंधित फसलों की खेती के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। इस शिविर में अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम सियांग, कामेंग और तावंग जिले के सात किसानों ने सुगंधित फूलों की खेती का ज्ञान हासिल किया। इसमें किसानों को सुगंधित फसलों जैसे कि गुलाब, लैवेंडर, रोजमेरी, जंगली गेंदा, लेमन ग्रास आदि की खेती, उत्पादन एवं मूल्यवर्धन की जानकारी दी गई। प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम



सीएसआइआर-आइएचबीटी में प्रशिक्षण शिविर के दौरान अरुणाचल प्रदेश के किसानों के साथ संस्थान निदेशक डॉ. संजय कुमार • जागरण

समन्वयक डॉ. राकेश कुमार ने किसानों को खेती की तैयारी, नर्सरी प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन कीट और रोग प्रबंधन सहित सुगंधित फसलों की कटाई व प्रबंधन से अवगत करवाया। उन्होंने किसानों को आर्थिक तौर पर लाभांशित करने में सहायक

सुगंधित तेल निकासी इकाई का भी भ्रमण कर प्रोसेस बताई। उत्तर पूर्वी विकास वित्त निगम लिमिटेड, गुवाहाटी की ओर से किसानों की यात्रा को प्रायोजित किया गया था। तेजपुर विश्वविद्यालय असम की सहायक प्रोफेसर डॉ. नीमा डी नामसा ने भी इस प्रशिक्षण में भाग

लिया। अरुणाचल प्रदेश के किसानों को 20 एकड़ क्षेत्र की खेती के लिए सुगंधित फसलों गुलाब, रोजमेरी, जंगली गेंदा, मेट्रीकेरिया के बीज व पौध भी उपलब्ध कराए गए।

सीएसआइआर-आइएचबीटी निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किसानों को सुगंधित

फसलों की क्षमता और इत्र, स्वाद और खाद्य उद्योग में बढ़ती मांग के बारे बताया। हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश की कृषि-जलवायु परिस्थितियां एक समान हैं और किसान संस्थान की ओर से विकसित कृषि-प्रक्रिया प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने ने भविष्य में खेती में आने वाली कठिनाइयों को हल करने व सुगंधित तेल निकासी इकाई उपलब्ध कराने का भी किसानों से वादा किया। डॉ. एनडी नामसा ने बताया कि उच्च मूल्य वाली सुगंधित फसलों के सफल प्रसार एवं अरुणाचल प्रदेश की अनुपजाऊ भूमि के उपयोग से छोटे और सीमांत किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। सीएसआइआर-आइएचबीटी के वैज्ञानिकों से विशेष अनुरोध किया कि अरुणाचल प्रदेश में सुगंधित फसलों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर स्थानीय किसानों में जागरूकता पैदा करें।

Published in:

Dainik Jagran, Page no. 4



## Farmers trained to cultivate aromatic crops

### OUR CORRESPONDENT

PALAMPUR, DECEMBER 28

Tribal farmers from West Kameng, West Siang and Tawang districts of Arunachal Pradesh visited CSIR-IHBT, Palampur, for a two-day awareness-cum-training programme on the process and technologies to cultivate aromatic crops under CSIR's Aroma Mission.

The farmers were imparted training on the process to cultivate various varieties, including damask rose, wild marigold, rosemary, Valeriana jatamansi and Matricaria chamomilla.

Rakesh Kumar, principal scientist-cum-training programme organiser, said the farmers were imparted practical exposure on field preparation and management of nursery, nutrients, weed, insect, pest and disease and post harvest management of aromatic crops. The crops have a huge potential in the world market as the essential oils obtained from these are used in perfumes, fragrances and flavours.

The farmers were accompanied by Dr Nima D Namsa, Assistant Professor, Tezpur University, Assam.

**Published in:**  
Amar Ujala



CSIR-CBRI

# विज्ञान में रुचि बढ़ाने के लिए प्रयोगात्मक तरीके अपनाना जरूरी

रुड़की। सीबीआरआई रुड़की में जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय संगठन, रुड़की के चार मंडलों के भौतिक विज्ञान के स्नातकोत्तर शिक्षकों के लिए एक शिक्षक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें व्याख्यान के जरिए शिक्षकों को विज्ञान क्षेत्र में सीएसआईआर और सीबीआरआई की नवीनतम तकनीकियों से भी रूबरू कराया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. एन गोपालकृष्णन ने शिक्षकों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। सभी प्रतिभागियों ने संस्थान के रूरल पार्क, अग्नि अनुसंधान, पर्यावरण विज्ञान प्रौद्योगिकी, भवन दक्षता आदि प्रयोगशालाओं का दौरा किया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एलपी सिंह ने भवनों में नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग, नैनो तकनीक द्वारा कंक्रीट को मॉडिफाई करने और



रुड़की सीबीआरआई में आयोजित जिज्ञासा कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों को जानकारी देते वैज्ञानिक। अमर उजाला

## चार मंडलों के शिक्षक सीबीआरआई में तकनीकी से हुए रूबरू

भवनों में लोडिंग क्षमता को अनुकूलित करने के विषय में जानकारी दी। जिज्ञासा कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल ने कहा कि आमतौर पर विद्यार्थी विज्ञान विषय को अन्य विषयों की तुलना में नीरस मानते हैं। शिक्षण में पाठ्य चर्चा के दौरान

नीरसता को कम करने के लिए शिक्षकों को विज्ञान पर आधारित चुटकुलों आदि से माहौल को जीवंत बनाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम में केवी देहरादून, जम्मू, लखनऊ और जयपुर क्षेत्र के लगभग 40 भौतिक विज्ञान के स्नातकोत्तर शिक्षकों तथा प्रधानाचार्य विपिन त्यागी ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर आरएस चिमोटे, डॉ. रजनी लखानी, डॉ. एलपी सिंह, चंदन स्वरूप मीणा, नरेश रहे।

**Published in:**

Amar Ujala





## Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles



[CSIR INDIA](#)



[CSIR\\_IND](#)



[CSIR India](#)